ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 89-90
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

विभिन्न शैक्षिक संवर्ग के बी0एड्0 छात्राध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिरूचि का अध्ययन

1. रवि शंकर सिंह
2. प्रो0 शोभा गौड़

1. शोध अध्येता, 2. अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता– शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-23.07.2023, Revised-30.07.2023, Accepted-05.08.2023 E-mail: ravi_gkp007@yahoo.co.in

सारांशः ***प्रस्तुत शोध पत्र में शोध छात्र ने "विभिन्न शैक्षिक संवर्ग के बी0एड0 छात्राध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिरूचि के अध्ययन पर शोध कार्य किया है। इसमें शोध छात्र ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है। शोध कार्य में शोध छात्र ने दीनदयाल उपध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अन्तर्गत बी0एड्0 कालेजों में प्रशिक्षित छात्र–छात्राओं का चयन किया। जिसमें शोध छात्र द्वारा शोध कार्य में आंकड़ों का विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट, प्रविधियों के साथ–साथ एस0पी0एस0एस उपकरण का प्रयोग किया गया।***

कुंजीभूत शब्द– शैक्षिक संवर्ग, शिक्षण व्यवसाय, अभिवृत्ति, अभिरूचि, अभिवृत्ति शब्द व्यवहार, संज्ञानात्मक, शिक्षण व्यवसाय।

शिक्षण प्रक्रिया से व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र का विकास किया जाता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान सशक्त यंत्र होता है। शिक्षक–शिक्षण संस्थानों में छात्राध्यापकों को कक्षा शिक्षण के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षक की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ कक्षा के अन्दर व बाहर विस्तार रूप में पायी जाती हैं। शिक्षक शैक्षिक नीतियों का कार्यान्वयन, पाठ्यक्रम का लेन–देन और जागरूकता फैलाता है, जो शिक्षक को सबसे आगे रखते हैं। जिसमें निर्दिष्ट दक्षताओं और सही दृष्टिकोण की शिक्षक के व्यवहार, दृष्टिकोण और रुचि छात्र के व्यक्तित्व को आकार देने में मदद करते हैं।

अभिवृत्ति शब्द व्यवहार, संज्ञानात्मक और व्यक्तिगत व्यवहार तीन घटकों से बना है। शिक्षण की अभिवृत्ति (रवैया) पर घरेलू माहौल, पारिवारिक, पृष्ठभूमि, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, विश्वास और शैक्षणिक संस्थान आदि का प्रभाव पड़ता है। यह शिक्षण व्यवसाय के लिए भी शिक्षक के शैक्षणिक अनुभव में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

शिक्षकों को अपने कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक और जिम्मेदार बनने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षण व्यवसाय के प्रति जैसा कि शिक्षक के पास मौजूद रवैया कार्य की गुणवत्ता और शिक्षण को प्रभावित करता है। शिक्षक के दिष्टकोण में दक्षताओं की छाप है जो उसके पास है स्कूल की स्थिति, स्कूल के बुनियादी ढाँचें, स्कूल में सुरक्षा की स्थिति, सामाजिक और इन सभी कारकों की व्यावसायिक स्थिति शिक्षकों पर प्रभाव डालने में महत्त्वपूर्ण है। व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का आकलन करने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं।

आधुनिक जगत् में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेरबदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनो सामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत् भी अछूता नहीं है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति से समृद्ध थी जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी।

विवेकानन्द का कहना है कि वही शिक्षक सच्चा है जो विद्यार्थियों के स्तर पर उतकर उनकी आत्मा का परीक्षण करके शिक्षा देता है और अच्छी शिक्षा वह है जो विद्यार्थियों को प्रेरणा देती है। कुछ शिक्षा शास्त्रियों ने यहाँ तक कहा है कि शिक्षक यह धुरी है जिसके चारों ओर शिक्षण की प्रक्रिया घूमती रहती है। शिक्षक का वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस तथ्य की संस्तुतियाँ की गई है कि शिक्षकों के लिए सार्थक एवं आवश्यकता आधारित कौशलों के विकास हेतु नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाएँ ताकि अध्यापकों की प्रभावशीलता में वृद्धि हो व्यावसायिक वचन बद्धता सुनश्चित हो एवं कार्य दबाव का स्तर न्यूनतम हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसी तथ्य को दोहराया गया तथा कहा गया कि "शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की सार्थकता, उसकी विषय–वस्तु तथा ज्ञान के सतत् विकास पर निर्भर करेगी।"

अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों अथवा विश्वासों को इंगित करती है। ये बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा उसके पूर्व विश्वास क्या है अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से हैं जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।

शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण कार्य छात्रों के विकास को गति प्रदान करना है। इसके लिए उन्हें आवश्यकतानुसार समय–समय पर प्रेरणा व आवश्यक अभ्यास दिलाना है। शिक्षक का कार्य शिक्षण के द्वारा छात्रों को नवीन ज्ञान को नवीन सूचनाओं द्वारा परिपूरित कर उन्हें ज्ञान को व्यवस्थित करना, उनके विचारों की परिपक्वता को बढ़ाना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रयास में प्रत्येक शिक्षक शिक्षण में सफल हो, प्रभावी हो, स्पष्ट ज्ञान देने वाला हो, यह आवश्यक नहीं।

शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति कम समर्पित होते हैं उनमें अध्यापन अभिवृत्तियाँ, अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का नकारात्मक दृष्टिकोण प्रायः देखने को मिलता है। ये शिक्षक अपने जीवन से भी कम संतुष्ट रहते हैं। सभी व्यक्ति अपने जीवकोपार्जन के लिए कोई ना कोई कार्य करते हैं तथा एक निश्चित व्यवसाय का चुनाव करते हैं। व्यक्ति जिस भी व्यवसाय को चुनता है। उसके प्रति उस व्यक्ति का सकारात्मक दृष्टिकोण होना बहुत ही आवश्यक होता है अर्थात् उसकी अभिवृत्ति उस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक होने पर ही वह उस व्यवसाय को अपनाकर अपने जीवन में संतुष्टि पा सकता है और उस कार्य को वचनबद्ध होकर कर सकता है अन्यथा नहीं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

शिक्षक, शिक्षा का महत्त्वपूर्ण घटक है, जिसे शिक्षा समुदाय से अधिक समर्थन प्राप्त है और जिसका मूल्यांकन शिक्षकों को छात्रों के शिक्षण के रूप में शुरू करके सकारात्मक रूप से किया जाता है। शिक्षण व्यवसाय में आंतरिक एवं बाहरी व्यक्तियों की बढ़ती संख्या छात्र शिक्षण की प्रकृति के बारे में सवाल उठा रही है। भावी शिक्षक की शिक्षण दक्षता पर पड़ने वाले प्रभावों से शिक्षण पर अभिरुचि एवं अभिवृत्ति का असर पड़ता है।

शिक्षण की समस्याओं तथा विद्यार्थियों के व्यवहार के विकास से सम्बन्धित सभी समस्याओं का अध्ययन हम शैक्षिक अनुसंधान प्रक्रिया के माध्यम से ही करते हैं। शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसंधान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वही शैक्षिक अनुसंधान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसंधान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसंधान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्त्व दिया जाता है, जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है।

प्रयुक्त शोध के अन्तर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का अध्ययन किया गया है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार "वर्णनात्मक अनुसंधान, 'क्या है?' का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो सततता में है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रही हैं, प्रक्रियायें जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा नयी दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं, उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।"

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि से तथ्यों का विश्लेषण प्राथमिक स्त्रोतो से प्राप्त किया है न्यादर्श का चयन स्तरीयकृत आनुपातिक यादृच्छिक प्रति चयन विधि से किया गया है।

प्रस्तुत शोध हेतु एस० पी० एस० एस० उपकरण का उपयोग वर्तमान अध्ययन के लिए तथ्यों को एकत्र करने के लिए अन्वेषक द्वारा किया गया है। लिकर्ट पैमाने में बहुविकल्पी प्रकार के 5 मदस् प्रयोग किए हैं। इस पैमाने पर न्यूनतम 1 अंक पर पूर्णतय असहमत, 2 अंक पर असहमत, 3 अंक पर अनिश्चित, 4 अंक पर सहमत तथा 5 अंक पर पूर्णतय सहमत प्राप्त किए जा सकते हैं। 1–2 तक और 3 अंक, 4 से 5 के अंक क्रमशः शिक्षण में निम्न, मध्य और उच्च स्तर की अभिवृत्ति एवं अभिरूचि दर्शाते हैं।

वर्तमान में प्रचलित बी0एड्0 पाठ्यक्रम बहुत पुराना हो चुका है और उसमें परिवर्तन की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षा पद्धति में सुधार हेतु यह आवश्यक है कि, हम वर्तमान में चलन में आ रहे शिक्षण पद्धतियों एवं तकनीकों में भी समय के साथ साथ आवश्यक सुधार करते रहें। शिक्षण का अर्थ एवं महत्त्व, 'शिक्षण' एक मानसिक प्रक्रिया है तथा इसमें बुद्धि का बुद्धि के साथ संबंध स्थापित किया जाता है। शिक्षण प्रक्रिया के दो महत्त्वपूर्ण पहलू होते हैं एक अध्यापक, दूसरा–छात्र। अध्यापक छात्र के निर्दिष्ट आचरण में परिवर्तन संभव बनाता है। उसमें स्पष्ट लक्षणों का निर्माण करता है तथा ज्ञान–तत्त्व को विकास की गति प्रदान कर रहा है, दूसरी ओर बालक अध्यापक का अनुसरण करता हुआ ज्ञान–पिपासा की तृप्ति कर लेता है। इस मानसिक प्रक्रिया में अध्यापक की क्रिया को शिक्षण एवं छात्र की क्रिया को सीखना कहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस तथ्य की संस्तुतियाँ की गई है कि शिक्षकों के लिए सार्थक एवं आवश्यकता आधारित कौशलों के विकास हेतु नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाएँ, ताकि अध्यापकों की प्रभावशीलता में वृद्धि हो व्यावसायिक वचन बद्धता सुनश्चित हो एवं कार्य दबाव का स्तर न्यूनतम हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसी तथ्य को दोहराया गया तथा कहा गया है कि– "शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की सार्थकता, उसकी विषय–वस्तु तथा ज्ञान के सतत विकास पर निर्भर करेगी।"

निष्कर्ष – शोधकर्ता ने अध्ययन उपरान्त यह पाया है कि "विभिन्न शैक्षिक संवर्ग के बी0एड्0 छात्राध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिरूचि का अध्ययन" में अन्तर नहीं पाया गया जिससे छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति समान अभिवृत्ति एवं अभिरूचि रखते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Warner, R.k~ H.k~ ;1962).k~ Elementary school teaching practices.k~ Atmaram & Sons.
2. रे, सिप्रा (1990) प्रशिक्षणार्थियो की अभिवृत्ति तथा नौकरी संतुष्टि का अध्ययन।
3. शर्मा, सरोज एवं गुप्ता, नंदिनी (2007), शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबंध, श्याम प्रकाशन, जयपुर।
4. डगलस, डी, रेडडी (2013). शैक्षिक एवं विद्यालयी संरचना का अध्ययन शिक्षक महाविद्यालय अभिलेख 106 (20) अक्टूबर 2004 पृ0 1989–2014.
5. डेविस, (2015). अध्यापकों के चयन में केन्द्रीय स्थिति का निर्णय और विद्यालयी अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, केलीफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, फ्रेस्नो।
6. डी,कोर (2016) जम्मू डीविजन के विद्यार्थियों के व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
7. वही।
8. कुमार एम. (2018) शिक्षक–शिक्षा में गुणवत्ता के मुद्दे रिव्यु ऑप रिसर्च मार्च 2018 वोल.7, अंक 6 पृ0 1–8.
9. श्रीमती मनका देवी, (2020), बी0एड्0 एवं बी0एस0टी0सी0 प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि और अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, इण्डियन जर्नल आफ रिसर्च, पृ0 153.

*****